**पत्र सूचना शाखा**
**सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ0प्र0**
---

**<u>राज्यपाल से मिला अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव में शामिल होने आये महाराष्ट्र के छात्रों का दल</u>**

लखनऊ: 9 अक्टूबर, 2018

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री राम नाईक से आज प्रो0 भानुदास नरसिंहराव बिरादर एवं मनगांव जूनियर कालेज महाराष्ट्र के छात्र-छात्राओं के एक दल ने भेंट की। यह दल लखनऊ में आयोजित 'अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव' में सम्मिलित होने हेतु आया था। राज्यपाल ने सभी छात्र-छात्राओं को अपने चतुर्थ वार्षिक कार्यवृत्त 'राजभवन में राम नाईक' की प्रति भेंट की।

राज्यपाल ने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुये कहा कि 'चैथे वर्ष का कार्यवृत्त देखकर इस बात का अंदाजा लगाया जा सकता है कि राजभवन आराम या रिटायरमेंट पोस्टिंग की जगह नहीं है, बल्कि राज्यपाल का पद संवैधानिक पद है जिसके कर्तव्य और दायित्व दोनों महत्व के होते हैं।' उन्होंने छात्रों को राज्यपाल के दायित्व के बारे में विस्तार से बताया तथा यह भी कहा कि सामाजिक क्षेत्र में काम करने वालों के जीवन में पारदर्शिता एवं जवाबदेही जरूरी है। इसी दृष्टि से वे विधायक, सांसद रहते हुए तथा उसके बाद भी अपना वार्षिक कार्यवृत्त जनता के समक्ष रखते हैं। उन्होंने कहा कि राजभवन में रहते हुए भी यह क्रम जारी है।

श्री नाईक ने कहा कि दीर्घकाल तक काम करने के लिए व्यक्तित्व विकास के साथ स्वास्थ्य का अच्छा होना जरूरी है। राज्यपाल ने व्यक्तित्व विकास के चार मंत्र बताते हुए कहा कि सदैव प्रसन्नचित रह कर मुस्कराते रहंे, दूसरों के अच्छे गुणों की प्रशंसा करें और अच्छे गुणों को आत्मसात करने की कोशिश करें, दूसरों को छोटा न दिखाए तथा हर काम को और बेहतर ढंग से करने का प्रयास करें। उन्होंने 'चरैवेति! चरैवेति!!' श्लोक को उद्धृत करते हुए कहा कि निरंतर प्रयास करने वालों को ही सफलता मिलती है।

राज्यपाल ने अपने बारे में बताते हुए कहा कि उन्होंने 1958 में मुंबई के के0सी0 लाॅ कालेज से नौकरी करते हुए विधि की डिग्री प्राप्त की। वे मुंबई से तीन बार विधायक तथा पांच बार सांसद रहे तथा पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी की सरकार में रेल राज्यमंत्री, कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्री तथा बाद में पेट्रोलियम मंत्री भी रहे। जुलाई 2014 में उत्तर प्रदेश के राज्यपाल पद की शपथ ली। राज्यपाल ने बताया कि मुंबई से प्रकाशित दैनिक समाचार पत्र 'साकाल' के अनुरोध पर उन्होंने अपने संस्मरण पर आधारित 17 लेख लिखे जो नियमित रूप से प्रकाशित हुये। बाद में लेखों को संग्रहित करके मराठी भाषा में पुस्तक 'चरैवेति! चरैवेति!!' के रूप में प्रकाशित किया गया। मराठी के बाद पुस्तक का हिंदी, अंग्रेजी, गुजराती, उर्दू एवं संस्कृत भाषा में प्रकाशन हो चुका है। उन्होंने बताया कि शीघ्र ही पुस्तक 'चरैवेति! चरैवेति!!' का जर्मन, अरबी, फारसी एवं सिंधी भाषा में लोकार्पण होगा।

---

अंजुम/ललित/राजभवन (392/17)